राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय दो

परमेश्वर का राज्य

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4
नोट्स 5
I. परिचय (0:26) 5
II. वृहद् एवं संकीर्ण (2:50) 5
A. अपरिवर्तनीय (3:24) 5
B. विकासशील (5:10) 5
III. प्राचीन इतिहास (12:35) 6
A. स्थान (13:21) 6
1. आरम्भिक तैयारियाँ (13:59) 6
2. निरन्तर विस्तार (19:16) 8
B. लोग (21:37) 9
1. याजक (23:12) 9
2. सह-शासक (24:58) 10
C. प्रगति (28:48) 11
1. वैश्विक विश्वासघात (29:29) 11
2. दुष्टता और न्याय (31:02) 11
3. दीर्घावधि रणनीति (32:58) 12
IV. इस्राएल जाति (37:40) 13
A. स्थान (38:30) 13
1. मूल केन्द्र (40:38) 13
2. विस्तार (43:28) 14
B. लोग (45:40) 15
1. इस्राएल का चुनाव (46:27) 15
2. याजकों का राज्य (47:59) 15
3. याजक और राजा (49:38) 15
C. प्रगति (50:48) 16
1. वायदा (51:45) 16

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. निर्गमन और विजय (54:40) 16
3. साम्राज्य (57:51) 17

V. नया नियम (1:04:52) 18

A. स्थान (1:06:36) 19
1. विस्तार (1:10:57) 20
B. लोग (1:12:17) 20
1. विश्वासी (1:18:21) 22
C. प्रगति (1:20:42) 22
1. उदघाटन (1:23:07) 22
2. निरन्तरता (1:23:30) 23
3. पूर्णता (1:24:10) 23

VI. उपसंहार (1:25:35) 23

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 24

उपयोग के प्रश्न 30

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:26)

II. वृहद् एवं संकीर्ण (2:50)

A. अपरिवर्तनीय (3:24)

परमेश्वर का अपनी सृष्टि पर अटल शासन रहा है और सदा रहेगा।

B. विकासशील (5:10)

परमेश्वर का राज्य विकसित होता है, उसमें उतार-चढ़ाव होता है, और अन्ततः वह इस बिन्दू तक बढ़ता है कि वह सम्पूर्ण संसार में फैल जाता है।

परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर आता है और उसे रूपान्तरित करता है, जिससे पृथ्वी स्वर्ग के समान हो जाती है।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

पुराने नियम ने वायदा किया था कि एक दिन परमेश्वर पृथ्वी को छुटकारा देगा, नया करेगा और सिद्ध बनाएगा जिससे यह स्वर्ग के आश्चर्य को प्रतिबिम्बित करे।

हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपने महिमामय, शाही तेज में पृथ्वी पर आए।

III. प्राचीन इतिहास (12:35)

A. स्थान (13:21)

उत्पत्ति 1 बताता हैं कि परमेश्वर ने किस प्रकार अपने राज्य के स्थान के रूप में पृथ्वी को स्थापित करना शुरू किया।

1. आरम्भिक तैयारियाँ (13:59)

उत्पत्ति अध्याय 1 इस बात पर ध्यान देता है कि परमेश्वर ने आरम्भ में संसार को अपना राज्य बनने के लिए किस प्रकार तैयार किया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उत्पत्ति 1:2-2:3 : परमेश्वर ने पृथ्वी को तीन-स्तरीय संरचना में अपने महिमामय राज्य का स्थान बनाना शुरू कर दिया।

उत्पत्ति 1:3-31 : सृष्टि में आदेश के छः दिन। परमेश्वर ने संसार को अपना राज्य बनने के अनुरूप बनाया।

- पहले तीन दिन परमेश्वर इस तथ्य से निपटता है कि संसार बेडौल था।

- बाद के तीन दिनों में वह इस तथ्य से निपटता है कि संसार सुनसान था।

"सृष्टि अच्छी थी" — परमेश्वर ने नैतिक अर्थ में अपने कार्य का अनुमोदन किया :

- उसने महत्वपूर्ण रूप से अव्यवस्था, अन्धकार और गहराई को सीमित कर दिया था।

- उसने संसार को एक क्रम प्रदान किया था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इब्रानी में *तोव* का अर्थ है :

- मनोहर
- सुखद
- खूबसूरत

2. निरन्तर विस्तार (19:16)

उत्पत्ति अध्याय 2 : सम्पूर्ण संसार कुछ हद तक क्रमबद्ध हो गया था, लेकिन पृथ्वी पर वास्तव में एक ही स्थान था जिसे स्वर्ग कहा जा सकता था।

इब्रानी में *अदन* का अर्थ है :

- सुहावना
- मनोहर

अदन परमेश्वर की विशेष प्रसन्नता का कारण था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. लोग (21:37)

परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपने सेवक नियुक्त किया, और वे यंत्र जिनके द्वारा वह पृथ्वी को अपना राज्य बनाने की तैयारियों को पूर्ण करेगा।

परमेश्वर ने मानव जाति को एक कार्य के लिए बनाया था जो एक प्राणी के लिए बहुत बड़ा था।

1. याजक (23:12)

आदम और हव्वा को याजकीय सेवा का कार्य दिया गया।

वाटिका में आदम और हव्वा की भूमिका का वर्णन इस प्रकार किया गया है जो परमेश्वर की याजकीय सेवा में लेवियों की भूमिका के इस तकनीकी वर्णन को प्रतिबिम्बित करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सह-शासक (24:58)

आदम और हव्वा को परमेश्वर के सह-शासकों के राजकीय रूप में भी नियुक्त किया गया था। वे शाही याजक थे।

परमेश्वर ने अपने शाही स्वरूप से कहा कि वह संख्या में बढ़े और फैल जाएं :

- अदन की वाटिका में
- सम्पूर्ण पृथ्वी में

परमेश्वर ने मानवजाति को अधिकार करने के लिए नियुक्त किया :

- अदन की वाटिका पर
- सम्पूर्ण पृथ्वी पर

स्वर्ग के महान राजा ने मनुष्यों को अपने राज्य के विस्तार के उपकरण के रूप में नियुक्त किया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. प्रगति (28:48)

1. वैश्विक विश्वासघात (29:29)

आदम और हव्वा के विद्रोह के कारण :

- उन पर और पृथ्वी पर शाप पड़ा।
- बढ़ना और अधिकार करना कठिन, कुण्ठाजनक और दर्दनाक बन गया।

मनुष्यजाति को :

- एक शत्रुतापूर्ण संसार में रहना पड़ा।
- परमेश्वर के स्वरूप के रूप में जीवन बिताने में कष्ट और व्यर्थता का अनुभव करने के लिए विवश होना पड़ा।

2. दुष्टता और न्याय (31:02)

मनुष्य निरन्तर दुष्टता में आगे बढ़ता रहा और परमेश्वर का भयानक दण्ड उन पर आ पड़ा।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. दीर्घावधि रणनीति (32:58)

परमेश्वर ने अपने राज्य को सारे संसार में विस्तार देने के लिए दीर्घावधि रणनीति को बनाया।

परमेश्वर ने मनुष्यों के एक चुने हुए समूह को पाप के अधिकार से छुड़ाकर, उनके द्वारा अपने राज्य को बनाने का निर्णय लिया।

शैतान और उसका अनुसरण करने वाले मनुष्य हव्वा की सन्तान को परेशान करते रहेंगे, परन्तु अन्ततः, उसके सच्चे वंशज, छुटकारा पाए हुए मनुष्य, उनसे वैश्विक विश्वासघात करवाने वाले पर जय प्राप्त करते हुए सर्प के सिर को कुचल देंगे।

परमेश्वर ने प्रकृति को स्थिर किया और संसार भर में जल-प्रलय की आशंका को दूर किया ताकि उसके छुड़ाए हुए स्वरूप मानवता के मूल कार्य को पूरा कर सकें।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर का ऐतिहासिक राज्य :

- अदन में आरम्भ हुआ
- परमेश्वर के याजकीय और शाही स्वरूप, मानवजाति द्वारा सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैलाया जाना था।

IV. इस्राएल जाति (37:40)

A. स्थान (38:30)

चूंकि अब्राहम इस्राएल का पिता था, इसलिए अब्राहम के साथ परमेश्वर के व्यवहार ने इस्राएल के साथ परमेश्वर के व्यवहार की दिशा तय की।

उस समय के बाद से अब्राहम के वायदे की भूमि संसार में परमेश्वर की गतिविधियों का केन्द्र बन गई।

1. मूल केन्द्र (40:38)

परमेश्वर के सांसारिक राज्य का मूल केन्द्र अदन था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने अब्राहम को अदन की वाटिका के क्षेत्र के निकट बुलाया।

2. विस्तार (43:28)

परमेश्वर ने पुराने नियम इस्राएल को वह भूमि पृथ्वी के अन्त तक उसके राज्य को बढ़ाने के लिए एक स्थान के रूप में दी थी।

अब्राहम और उसके वंश के प्रति जातियों की प्रतिक्रिया के जवाब में उन्हें आशीष देने और शाप देने की प्रक्रिया में, अन्तत: पृथ्वी के सारे लोग आशीष पाएँगे।

अब्राहम की आशीष पृथ्वी भर में सारे परिवारों तक पहुँचेगी।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. लोग (45:40)

1. इस्राएल का चुनाव (46:27)

इस्राएल के गोत्र परमेश्वर के राज्य के विशेष लोग थे।

2. याजकों का राज्य (47:59)

याजकों के राज्य के रूप में इस्राएल का यह स्थान दिखाता है कि इस्राएल आरम्भ में आदम और हव्वा द्वारा निभाई गई दो-स्तरीय भूमिका को निभाता रहा :

- राजा
- याजक

3. याजक और राजा (49:38)

कुछ इस्राएलियों को याजक और राजा का विशिष्ट पद दिया गया था।

हारून और उसके वंशजों को परमेश्वर के याजकों के रूप में उसकी सेवा करनी थी।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर के लोगों के राजाओं के रूप में सेवा करने के लिए दाऊद और उसके वंशजों को नियुक्त किया गया।

C. प्रगति (50:48)

परमेश्वर के राज्य ने उन्नति की, परन्तु मनुष्य के पाप के कारण, इन उन्नतियों ने परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी की छोर तक नहीं पहुँचाया।

1. वायदा (51:45)

अब्राहम, इसहाक, याकूब और इस्राएल के गोत्रों के बारह प्रधानों के दिनों में, परमेश्वर ने इस्राएल के भविष्य के बारे में बहुत से वायदे किए।

2. निर्गमन और विजय (54:40)

परमेश्वर ने अब्राहम से वायदा किया कि उसके वंशज कनान की पवित्र भूमि पर अधिकार करेंगे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने वायदा किया कि उसके विशेष जन इस्राएल वायदे के देश में अधिकार करेंगे और समृद्धि प्राप्त करेंगे।

परमेश्वर चरवाही करने वाले राजा के रूप में अपने लोगों को अपने पवित्र निवासस्थान की ओर ले जा रहा था।

परमेश्वर ने उन्हें उन लोगों के रूप में स्थापित करने की इच्छा की जो उसके शाही सिंहासन के चारों ओर रहेंगे।

3. साम्राज्य (57:51)

इस्राएल के इतिहास के साम्राज्य के चरण में इस्राएल राजा और मन्दिर के साथ एक स्थापित राष्ट्र बन गया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान ने यरूशलेम को राजा और मन्दिर के स्थान के रूप में स्थापित करके पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाया।

दाऊद का शाही परिवार पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का प्रतिनिधित्व करेगा।

जिस प्रकार परमेश्वर का राज्य दाऊद के घराने के शासन के द्वारा इस्राएल की सीमाओं से पृथ्वी की छोर तक फैला, वैसे ही परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति सम्पूर्ण संसार में उसी प्रकार फैल जाएगी जैसी यह स्वर्ग में है।

V. नया नियम (1:04:52)

नया नियम सुसमाचार, या मसीह का सुसमाचार, पुराने नियम के परमेश्वर के राज्य के विषय का ही क्रियात्मक रूप है।

सुसमाचार परमेश्वर के राज्य का सन्देश है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. स्थान (1:06:36)

1. केन्द्र (1:06:58)

नये नियम में परमेश्वर का राज्य इस्राएल में केन्द्रित है।

यीशु के समय तक, इस्राएल के लोग निष्कासन में थे, तितर-बितर थे, और सैंकड़ों वर्षों से पाँच अन्यजाति साम्राज्यों की तानाशाही को झेल रहे थे।

- अश्शूरियों
- कसदियों
- मादी और फारसियों
- यूनानियों
- रोमियों

यीशु पृथ्वी पर इस निष्कासन को समाप्त करने के लिए आया था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. विस्तार (1:10:57)

नया नियम सिखाता है कि एक दिन वैश्विक विस्तार की आशा मसीह में पूर्ण होगी।

B. लोग (1:12:17)

परमेश्वर ने नियुक्त किया कि उसका वैश्विक राज्य स्वर्ग में उसके राज्य का प्रतिबिम्ब होगा। यह उसके स्वरूप, मानव जाति के कार्य के द्वारा होना था।

1. मसीह (1:13:29)

a. अंतिम आदम

मसीह ने आदम द्वारा लाए गए शाप को पलट दिया।

- आदम के पाप ने मानवता को दोषी ठहराया
- यीशु के आज्ञापालन ने परमेश्वर के स्वरूप के रूप में मानवता की भूमिका को पूर्ण किया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

चूंकि मनुष्य की मृत्यु मनुष्य (आदम) के द्वारा आई, इसलिए मनुष्य का पुनरूत्थान भी मनुष्य (मसीह) ही के द्वारा आना था।

b. याजक और राजा

मसीह याजक और राजा के पदों को भी पूर्ण करता है।

मसीह राजा के कार्य को सिद्धता से करता है, इसलिए उसके नेतृत्व में परमेश्वर के राज्य का कभी अन्त न होगा।

याजक और राजा के रूप में मसीह के नेतृत्व के द्वारा, परमेश्वर का राज्य वास्तव में पृथ्वी पर वैसे ही आएगा जैसे वह स्वर्ग में है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. विश्वासी (1:18:21)

मसीह का अनुगमन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के लोगों के बीच गिना जाता है और उसे परमेश्वर के राज्य के निर्माण का कार्य दिया जाता है।

जब हम मसीह के पीछे चलते हैं और उसके आत्मा के सामर्थ में जीते हैं, हम सब परमेश्वर के राज्य में विशेष, चुने हुए यंत्र हैं।

C. प्रगति (1:20:42)

परमेश्वर के राज्य की शुरूआत छोटी होगी, परन्तु बाद में यह बड़े पेड़ के समान बढ़ जाएगा, संसार में अब तक ज्ञात सबसे बड़ा राज्य बन जाएगा।

1. उदघाटन (1:23:07)

यीशु और उसके प्रेरितों ने पृथ्वी पर परमेश्वर के महिमामय राज्य का **उदघाटन** किया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. निरन्तरता (1:23:30)

राज्य की निरन्तरता में मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच का सम्पूर्ण कलीसियाई इतिहास शामिल है-यह वह समय है जिसमें आप और मैं रहते हैं।

3. पूर्णता (1:24:10)

वह समय जब मसीह लौटेगा और सम्पूर्ण संसार को अपना राज्य बनाने की परमेश्वर की योजना को पूर्ण करेगा।

VI. उपसंहार (1:25:35)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. परमेश्वर की पूर्ण और अपरिवर्तनीय सर्वोच्चता पर पुराने नियम की शिक्षा का वर्णन कीजिए।

2. किन रूपों में बाइबल परमेश्वर के राज्य के विकास करने के बारे में बात करती है?

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

3. वर्णन कीजिए कि किस प्रकार प्राचीन या आरंभिक इतिहास ने सबसे पहले परमेश्वर के राज्य के स्थान को स्थापित किया।

4. परमेश्वर के राज्य की स्थापना और तैयारी में लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छापूर्ण भूमिका का वर्णन कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. प्राचीन समय के दौरान परमेश्वर के राज्य की प्रगति की संक्षिप्त रूपरेखा को दर्शाइए।

6. प्राचीन इस्राएल के दिनों में राज्य का स्थान क्या था?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. किस प्रकार प्राचीन इस्राएल के लोगों ने परमेश्वर के राज्य को स्थापित एवं तैयार किया?

8. प्राचीन इस्राएल के समय में परमेश्वर के राज्य की प्रगति का वर्णन कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. परमेश्वर के राज्य के स्थान के विषय में नया नियम क्या कहता है?

10. नया नियम किस प्रकार परमेश्वर के राज्य के लोगों का वर्णन करता है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. परमेश्वर के राज्य की प्रगति के विषय में नए नियम की शिक्षाओं को स्पष्ट कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. मत्ती 6:9-10 में जब यीशु ने अपने चेलों को "तेरा राज्य आए" की प्रार्थना करना सिखाया तो उसका अर्थ क्या था?

2. जब परमेश्वर ने पृथ्वी की रचना की तो उसने उसे अच्छा कहा। और मनुष्यजाति के पाप में पतन के बाद परमेश्वर ने पृथ्वी को इसकी पतित अवस्था से छुड़ाने के लिए दीर्घावधि की रणनीति बनाई। छुटकारे के लिए परमेश्वर के कार्यक्रम के प्रकाश में मसीहियों को पृथ्वी को कैसे देखना चाहिए?

3. परमेश्वर के राज्य की रणनीति में लोग चुने हुए ऐसे उपकरण हैं जिनके द्वारा वह पृथ्वी को अपना राज्य बनाने के लिए तैयार कर रहा है। दूसरों के साथ आपके संबंध में इसके क्या आशय हैं? परमेश्वर के प्रति व्यक्तिगत सेवा के महत्व के विषय में इसका क्या अर्थ है?

4. परमेश्वर किस प्रकार के राज्य की स्थापना कर रहा है? जब परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर इस प्रकार प्रकट होता है जैसा कि अभी स्वर्ग में है, तो पृथ्वी पर जीवन कैसा होगा?

5. सुसमाचार और परमेश्वर के राज्य में क्या संबंध है? इस संबंध को जानना किस प्रकार सुसमाचार के प्रति आपके ज्ञान को बढाता है?

6. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org